Research Times/Vol 8/September 2020 ISSN 2395-011x

आत्मनिर्भर भारत हेतु चीनी उत्पादों का बहिष्कार कर स्वदेशी अपनाना होगा

डॉ. सुनील श्रीवास्तव
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश :-

सन् 2020 में चीन ने अपनी उसी हरकत को दोहराया है, जो उसने 1962 में भारत पर आक्रमण कर की थी। उस समय भी लगातार कई वर्षों के अकाल व भुखमरी के हालातों से चीनी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ था। देश के भीतर चीनी जनता द्वारा क्रांति की स्थिति पैदा होते देखकर चीनी सरकार ने बौखलाहट में भारत पर आक्रमण कर दिया था। हमें तब ही यह समझ लेना था कि हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाने वाला यह राष्ट्र भरोसे के काबिल नहीं है।

मुख्य-शब्द - आत्मनिर्भर, वैश्विक, स्वाबलंबन, कायराना, संसाधन ।

वैश्विक संकट के इस दौर में जबकि समस्त राष्ट्र कोविड-19 (कोरोना वायरस) के संकट से जूझ रहे हैं, चीन द्वारा भारतीय सीमा पर अवांछित हरकतें कर सीमा पर अनावश्यक तनाव पैदा करना किसी भी दृष्टि से जायज नहीं है। जबकि यह तो ऐसा समय है जब विश्व के सभी राष्ट्रों को आपसी समझदारी और सामंजस्य दिखलाते हुए इस भयंकर त्रासदी से निपटने हेतु एक दूसरे की मदद करना चाहिये।

वैसे इतिहास गवाह है कि चीन पर जब भी कोई आंतरिक संकट पड़ता है तो वह अपनी भड़ास पड़ोसी राष्ट्रों पर निकालता है। वर्तमान संकट भी चीन की ही देन है, अमेरिका ने तो स्पष्ट रूप से कह ही दिया है कि संपूर्ण विश्व को इस त्रासदी में डालने का जिम्मेवार चीन ही है। इस समय जबकि चीन के उद्योग लगभग बंद हो रहे थे, बेरोजगारी 20% से अधिक बढ़ चुकी थी तब चीनी सरकार ने देश की आंतरिक दशा से जनता का ध्यान हटाने के लिये न केवल भारत वरन् वियतनाम, हांगकांग, आदि पड़ोसियों की सीमाओं व आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर अशांति फैलाना प्रारंभ कर दिया। अभी नहीं तो कभी नहीं की तर्ज पर अब समय आ गया है कि चीन की इन कायराना हरकतों का जवाब केवल डोकलाम, लद्दाख व अन्य सीमाओं पर तैनात हमारे जांबाज प्रहरी व हमारी सशस्त्र सेनाओं द्वारा ही न दिया जाये, बल्कि देश की समस्त 135 करोड़ जनसंख्या द्वारा चीन को सबक सिखाया जाये। हम भारतवासियों को आज ही यह शपथ लेनी है कि हम भविष्य में कभी चाइना द्वारा उत्पादित सामान का उपभोग नहीं करेंगे। निश्चित रूप से चाइना निर्मित उत्पाद की कीमत हमारे देश में निर्मित उसी वस्तु से तुलनात्मक रूप से कम होती है किंतु हमें अब अपनी सोच बदलना होगी कि क्या हम अपने व्यक्तिगत कुछ रूपयों के लाभ के लिये अपने देशी उत्पादों को,

देश के उद्योगों को और इस प्रकार देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर करेंगे। चाइना निर्मित उत्पादों का उपभोग कर हम चाइना की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। यदि हम अपने थोड़े से तात्कालिक लाभ को त्यागकर कुछ मंहगी ही सही किंतु अपने देश में निर्मित वस्तु का उपभोग प्रारंभ कर देते हैं तो इसका दूरगामी परिणाम अत्यंत लाभकारी होगा। हमारे स्वदेशी उद्योगों को मजबूती प्रदान होगी, चीनी उत्पादों के बहिष्कार से अपने देश की मुद्रा का जो हस्तांतरण चीन की ओर हो रहा है वह बंद हो जायेगा। वस्तुओं की अधिक कीमत भले ही भारतवासियों को चुकाना पड़े पर इससे हमारे गरीब तबके श्रमिकों मजदूरों को आर्थिक मदद होगी। देश में निर्मित वस्तुओं की मांग बढ़ने पर देश के उद्योगपति उद्योगों का विस्तार करेंगे। नये उद्योगपति भी निर्माण को प्रोत्साहित होंगे, विनियोग बढ़ेगा, लोगों को रोजगार मिलेगा, आय बढ़ेगी, इससे वस्तुओं की मांग में वृद्धि होगी और इस प्रकार खुशहाली का चक्र प्रारंभ हो जायेगा।

ऐसा करके हम न केवल अपनी जी.डी.पी. में वृद्धि करेंगे बल्कि चाइना की जी.डी.पी. को कमजोर भी करेंगे। एक अनुमान के अनुसार भारत चाइना से लगभग 5 लाख करोड़ से ज्यादा का सामान आयातित करता है। इतनी बड़ी रकम की वस्तुओं का आयात करने के बदले में हमें चीन से कोई सहयोग मिलना तो दूर बल्कि इसके विपरीत सीमा पर विवाद, तनाव एवं हमारे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप मिलता है। अतः हम भारतवासियों को तत्काल प्रभाव से चीनी उत्पादों का बहिष्कार करना ही होगा।

यहां एक बात और यह भी महत्वपूर्ण हैं कोरोना महामारी के इस संकट काल में हमारे देश के समान अमेरिका व अन्य कई राष्ट्र भी चीन से अपने व्यापारिक संबंध समाप्त करने के बारे में समान सोच रखते हैं। इस दिशा में भारत सरकार को भी दृढ़ता से विचार करना होगा कि उसे भी धीरे-धीरे चीन से समस्त प्रकार के राजनीतिक आर्थिक संबंधों को समाप्त करना है। निश्चित ही राजनीतिक दृष्टि से विदेश नीति के तहत एकाएक समस्त संबंधों को समाप्त करना संभव नहीं होता किंतु शनैः शनैः इस ओर विचार करना भारत सरकार को प्रारंभ करना होगा। सरकार की अनेक सीमाएँ हो सकती हैं किंतु हम 135 करोड़ जनता की तो कोई मजबूती नहीं है हम तो आज ही अभी से चाइना उत्पादित वस्तु का बहिष्कार प्रारंभ कर सकते हैं। 140 करोड़ से अधिक की जनसंख्या वाले राष्ट्र चीन को आर्थिक रूप से कमजोर कर हम एक बड़ी जंग जीतने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। हाँ स्वदेशी अपनाकर देशी उद्योगों को मजबूत कर हम हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आत्म निर्भर भारत अभियान को भी मजबूती प्रदान करेंगे। चाइना निर्मित उत्पादों का बहिष्कार प्रधान मंत्री जी की 'आत्मनिर्भर भारत' परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

चाइना से अपने सभी आयातों को समाप्त करने के फलस्वरूप आवश्यकता होने पर भारत को अपने व्यापारिक संबंध उन राष्ट्रों से स्थापित करने चाहिये जो भारत वर्ष के समान ही सकारात्मक सोच रखते हों, जो अन्य राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करते हों, जिनका नजरिया अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रति केवल लाभ का न होकर सभी राष्ट्रों के विकास का भी हो। इस प्रकार चाइना निर्मित उत्पादों का बहिष्कार करने के साथ ही चीन के विरूद्ध सम्पूर्ण विश्व में उपजे तात्कालिक विरोध का कूटनीतिक लाभ उठाकर न केवल हम अपने सहयोगी

ISSN 2395-0312

व मित्र राष्ट्रों से अपने संबंधों को सुदृढ़ कर सकते हैं बल्कि द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाकर देश के आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान कर सकते हैं।

कोरोना वायरस से उपजे संकट को कम से कम करने के उद्देश्य से चलाये गये एक लंबे लॉकडाउन का मुख्य लक्ष्य संक्रमण को कम से कम फैलने देने का था। हमने इसमें काफी हद तक सफलता भी पाई। पर हमने इस लॉकडाउन काल में कई अन्य सकारात्मक बातें भी हासिल की। हम देश वासियों ने इस बात को सीख लिया है, कि किस प्रकार हम अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम करते हुए जीवन यापन कर सकते हैं। हमें अधिक से अधिक वस्तुओं की आवश्यकता अपने लिये नहीं होती है, यह दूसरों को दिखाने के लिये अधिक होती है। अब भविष्य में भी हमें इस दिखावे की प्रवृत्ति से दूर रहना होगा। इस प्रकार हम प्राकृतिक संसाधनों के अनुचित दोहन से बचेंगे जिनका उपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिये किया जा सकेगा और इस प्रकार पर्यावरण को प्रदूषित होने से भी बचाया जा सकेगा। अनावश्यक व्यय से बचने वाली पूंजी का सदुपयोग विकास के कार्यों में किया जा सकता है। विदेशों में निर्मित वस्तुओं पर किये जो रहे अनावश्यक व्यय को समाप्त कर हम देश के विदेशी पूंजी भंडार को बढ़ाने में सहयोग कर सकते हैं। इस प्रकार से की गयी ये छोटी-छोटी व्यक्तिगत बचतें ही एक राष्ट्र के कुल पूंजी निर्माण में सहायक होती हैं।

वर्तमान कोरोना काल में चीन की आर्थिक दशा, बेरोजगारी की स्थिति कैसी भी हो पर वास्तविकता यह है कि चीन की जनता की स्थिति वहां की सामाजिक दशा बहुत अच्छी नहीं है। अन्य धर्मावलंबियों की हालात तो छोड़ें स्वयं चीनी लोगों में अधिकांश जनता बंधुआ मजदूरों की भांति जीवन-यापन कर रही है। यही कारण है कि संकट के समय में जनता का यह आक्रोश शीघ्रता से सामने आने लगता है। जनता अपना रोष सरकार के सामने प्रकट करती है और वहां की सरकार को अपने तख्तापलट का भय सताने लगता है। इस प्रकार मैं तो यह समझता हूँ कि चीन निर्मित उत्पाद के बहिष्कार की विश्व व्यापी मुहिम को सफल बनाकर यदि चाइना को आर्थिक दृष्टि से कमजोर किया जाये, तो चीन के नकारात्मक और दमनकारी नीतियों से तंग वहां की जनता ही चीनी सरकार के विरोध में एकजुट हो जायेगी।

जागो भारतवासियों जागो। यदि हम आज भी नहीं जागे तो कोई फायदा नहीं हमारे जांबाज सैनिकों को देश की सीमाओं में दुश्मनों से युद्ध करने का। सीमा पर तैनात हमारे सैनिकों के मनोबल को बढ़ाने के लिये, माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूर्णता प्रदान करने के लिये, देश को शत प्रतिशत स्वावलंबी बनाने के लिये आओ समस्त भारतवासी स्वदेशी अपनायें एवं देश को विश्वपटल पर नंबर एक बनाने में अपना भी योगदान दें।

नोट - यह लेख स्वयं के मौलिक विचारों पर आधारित है।

❖ ❖ ❖